असत्य की अत्याचारी तलवार के नीचे अपनी और अपने सम्बन्धियों की गर्दन रख दी। और जो काम गर्दनें काटकर नहीं हो सकता था उसे गर्दने कटवाकर पूरा कर दिया। यह विश्वास सर्वमान्य है और इस विचार पर हम सब का ईमान अडिग है। परन्तु इसके बावजूद हम इतिहास की इस बड़ी त्रासदी पर ध्यान नहीं देते कि इस दृढ़तम आधार के होते हुए भी हम एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं। आख़िर ऐसा क्यों है? 'हमारे इतिहास में यह विष कहां से आया' जिसने हमें इस सीमा तक अंधा कर दिया कि इतने बड़े बलिदान से लाभान्वित होने के स्थान पर हमने उसी को अपनी मौत का बहाना बना लिया।

मैं जब इतिहास उठाकर उसका अध्ययन करता हूं तो मुझे यह नाग फुँकारता दिखाई देता है और मैं अनुभव करता हूं कि इसकी निशानदही, इसका इंगित किया जाना ज़रूरी है।

सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि यह नाग केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं। इसकी लम्बी ज़बान हमें आज भी अपने चारों ओर तड़पती और क़ौदती दिखाई देती है। वही स्वार्थ, वही छोटे–छोटे निजी लाभ, वही रोटी और शोरबे के प्याले की छीना–झपटी, मोटरों और वायुयानों पर यात्रा करने की इच्छा और लोगों को भड़काकर अपने अन्दर छिपे हुए शैतान को संतुष्ट करने की कामना और यह गर्व कि वह ज़बान के हिलाने या क़लम के डुलाने से ही आग लगा सकते हैं खून की नदियां बहा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सही विचारधारा के विद्वान, उपदेशक और लेखक सामान्य मुसलमानों में इतनी चेतना पैदा कर दें कि वह मुसलमानों के इन खूनी सौदागरों के निकट न जाएं। और ऐसा वातावरण तैयार हो जाए। जिसमें लालची कठमुल्लाओं को मुसलमानों का खून बेचकर रोटी प्राप्त करने का साहस न हो सके।

●●●

नौहा

बारह मुहर्रम

y[kd % tukc 'kkdr lkgc fcyxkeh

आज जंगल में शहे गुलगूँ क़बा के फूल हैं
आज पझमुर्दा मज़ारे मुस्तफ़ा के फूल हैं

इस तरह उजड़ा न होगा कोई गुल्शन दहर में
जिस तरह पामाल बाग़े मुर्तज़ा के फूल हैं

फ़ातहे के वास्ते आये हैं मक़्तल में हरम
करबला में कुश्त ए करबोबला के फूल हैं

खून में डूबी हुई लाशें पड़ी हैं बेकफ़न
कौन समझेगा यह बाग़े मुस्तफ़ा के फूल हैं

खूँचकाँ लाशों पे गुरबत कह रही है यास से
किस क़दर रंगीं रियाज़े फ़ातिमा के फूल हैं

फ़ातेहा बेकस का है इसमें गुलो सौसन कहाँ
नील बाजू के हैं या दाग़े अज़ा के फूल हैं

कुछ जिगर ख़स्ता शहीदों की हैं लाशें बेकफ़न
कुछ रसन बस्ता रियाज़े फ़ातिमा के फूल हैं

अहले मातम जब लहू रोते हैं भर कर आहे सर्द
मैं समझता हूँ कि दामन में सबा के फूल हैं

शाह के अल्ताफ़ से हो जाएंगे 'शौकत' कुबूल
यह जो कुछ पझमुर्दा झोली में गदा के फूल हैं

●●●